जन्म शताब्दी पुस्तकमाला– ५४

कामनाएँ भगवान को सौंप दें

(प्रवचन)
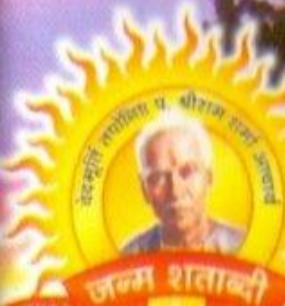
– श्रीराम शर्मा आचार्य

जन्म शताब्दी

कामनाएँ भगवान को सौंप दें

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

अध्यात्म महँगा है

मित्रो! जितने भी आदमी भगवान के भक्त हुए हैं, योगी हुए हैं, उनकी भक्ति और योग क्या योगाभ्यास तक, प्राणायाम तक या उपासना तक ही सीमित रहे? नहीं, मैं आपको बताना चाहूँगा कि विवेकानंद आधा घंटा उपासना करते थे, डेढ़ घंटा ध्यान करते थे और गांधी जी आधा घंटा सामूहिक प्रार्थना करते थे, लेकिन विवेकानंद से लेकर गांधी जी तक का, सभी का सारा का सारा जीवन भगवान के क्रिया-कलापों को पूरा करने के लिए समर्पित हो गया। बाकी भी जो महामानव हुए हैं, उनके जीवन की ओर जब हम देखते हैं तो भगवान बुद्ध ने क्या उपासना की, क्या पूजा की, हमें नहीं मालूम। नहीं

साहब! आप बताइए कि भगवान ने क्या पूजा की और कौन सा मंत्र जपा? बेटे! हमें नहीं मालूम, लेकिन हाँ, उन्होंने अपनी जिंदगी के सारे सुखों को, संसार को, जो उनके जीवन में शामिल थे, हर सुख को अलग फेंक दिया। बच्चे को अलग फेंक दिया, बीबी को अलग फेंक दिया, राज-पाट को अलग फेंक दिया। भगवान की इच्छा पूरी करने के लिए और भगवान की दुनिया को सुंदर बनाने के लिए अपनी सारी जिंदगी खतम कर दी। यही उनका असली मंत्र था।

नहीं महाराज जी! उसे रहने दीजिए और ये बताइए कि वे कौन सी माला से जप करते थे? बेटे! तू पागल आदमी है, केवल माला पूछता रहता है, मंत्र पूछता रहता है। असली माला नहीं पूछता, जो बड़ी महँगी पड़ती है। नहीं साहब! सस्ती माला बताइए। सस्ती माला कहीं नहीं बिकती है। अध्यात्म वाली माला महँगी है, अध्यात्म महँगा है। गांधी जी कौन सा मंत्र जपते थे? बेटे! हमें नहीं मालूम है।

हमने उन्हें 'हरे राम–हरे कृष्ण' ये कहते देखा था। 'ईश्वर–अल्लाह तेरो नाम, सबको सन्मति दे भगवान।' कहते सुना था। नहीं महाराज जी! कोई तो मंत्र जपते होंगे, उसी से ऐसा चमत्कार वे दिखा सके। यह तो हमें नहीं मालूम, लेकिन इतना मालूम है कि उन्होंने अपने जीवन का एक–एक अंश और एक–एक अंग इतना परिष्कृत बनाया था कि राम और गांधी में कोई फरक नहीं रह गया था। नानक जी ने कौन सा मंत्र जपा था? बेटे! हमको नहीं मालूम। नहीं साहब! कोई तो जपा होगा? बेटे! तुम तो बेकार की बहस करते हो, तुमसे हम यह कह सकते हैं कि उन्होंने अपने सारे जीवन का क्रम और स्वरूप ऐसा बना लिया था, जिससे कि भगवान को मजबूर हो करके उनके समीप आना पड़ा।

जीवन–साधना महत्त्वपूर्ण, विधि या माला नहीं

महाराज जी! नरसी मेहता ने कौन सा जप किया था? बेटे! तू बड़ा पागल है। हरदम मंत्र–तंत्र

पूछता रहता है। यह नहीं पूछता कि नरसी मेहता ने जिंदगी कैसी जी थी ? सुदामा जी ने भक्ति की थी तो श्रीकृष्ण भगवान के पास कौन सा चावल लेकर के गए थे ? महाराज जी आप बता दीजिए कि कितना ले जाऊँ तो मैं भी ले जाऊँ। बेटे! तू बासमती का डेढ़ किलो चावल लेकर श्रीकृष्ण भगवान के मंदिर में चले जाना और फिर यों कहना कि साहब! मैं नहीं देता हूँ....। जब भगवान तुम्हारी पोटली छीन लें, तब कहना कि लाइए, राज-पाट दीजिए। मित्रो! पोटली नहीं, सुदामा जी की जिंदगी को देखिए। यह नहीं कि वे कौन सा मंत्र जपते थे, वरन यह देखिए कि शुरू से अंत तक का उनका जीवन कैसा रहा ? जीवन-साधना कैसी रही ? मित्रो! सारी जिंदगी साधना करनी पड़ती है। साधना आधे घंटे में नहीं होती। आधे घंटे में तो केवल नशा किया जाता है, जिसका असर कुछ घंटे तक रहता है, किंतु साधना की मस्ती, भक्ति की मस्ती सारे दिन, सारी जिंदगी छाई रहती है। शराब का नशा पाँच मिनट में भी हो

सकता है और पंद्रह मिनट में भी हो सकता है। इसी तरह भजन का नशा जल्दी भी हो सकता है और देर में भी हो सकता है, पर नशा होना चाहिए। अगर नशा नहीं आए तब? तब तो बैठा रह घंटे भर तक, छह घंटे तक बैठा रह, नशा तो आना चाहिए। भक्ति का नशा हमारी जिंदगी में आना चाहिए।

आए जिंदगी में भक्ति का नशा

मित्रो! भक्ति का नशा अगर हमारी जिंदगी में आएगा तो आप पाएँगे कि आपके चिंतन और आपके स्वरूप सब बदलते हुए चले जाएँगे। आप सारे के सारे भक्तों के क्रिया-कलापों को मत पूछिए, जप की विधि मत पूछिए, वरन आप उनके जीवन को देखिए। आप देखिए कि उन्होंने कौन सी भक्ति की थी और किस ढंग से की थी? सुदामा की भक्ति को देखिए, सुग्रीव की भक्ति को देखिए कि उसने किस तरह की भक्ति की थी? अंगद की भक्ति को देखिए, हनुमान की भक्ति को देखिए। हनुमान जी का जीवन देखिए। नहीं साहब! कौन से मंत्र का जप किया था और कौन सा

अनुष्ठान किया था और कुंडलिनी कहाँ से जगाई थी? हनुमान चालीसा का पाठ कैसे किया था? बेटे! तू बड़ा पागल और जाहिल आदमी है। जाहिल और पागल मैं इसलिए कहता हूँ कि तू केवल कर्मकांडों की बावत मालूम करना चाहता है। कर्मकांडों के साथ में जीवन की जो प्रक्रियाएँ जुड़ी हुई हैं, उनको सुनना नहीं चाहता, देखना नहीं चाहता, बोलना नहीं चाहता और सोचना नहीं चाहता। नहीं साहब! आप तो हनुमान चालीसा को गालियाँ देते हैं। नहीं, बेटे! मैं गालियाँ नहीं देता, वरन मैं तो बीसों आदमियों से यह कहता रहता हूँ कि जिनको रात में खराब सपने दिखाई पड़ते हैं, वे हनुमान चालीसा सिर के नीचे रखकर सोया करें। रात में तुझे, जो वो भूत-प्रेत दिखाई पड़ते हैं और घर के चक्कर लगाते रहते हैं, जो गायत्री माता के जप से भी नहीं डरते तो फिर तू हनुमान जी का जप किया कर। हनुमान चालीसा पढ़ता हुआ सो जाया कर, निकल जाया कर। कोई आया भूत, बस, बुला लिया हनुमान जी को।

जीवनक्रम को बदलना होगा

महाराज जी! तो फिर आप हनुमान जी की भक्ति को गाली क्यों दे रहे थे? गाली इसलिए दे रहा था कि आप तो हनुमान चालीसा का पाठ करने तक सीमित हो गए? आपने यह विचार नहीं किया या नहीं करना चाहते कि भक्त को हनुमान जी जैसा होना चाहिए। भक्त को अपने जीवन का स्वरूप इस तरीके से बनाना चाहिए, जिस तरह से कि हनुमान जी का श्रेष्ठ जीवन, आदर्श जीवन, उत्कृष्ट जीवन, आकांक्षाओं से रहित जीवन रहा है। 'राम काज कीन्हें बिना, मोहि कहाँ विश्राम' यह हनुमान जी का आदर्श है। राम के काज में दिन और रात लगे बिना आप हनुमान जी की पूजा करना चाहते हैं। नहीं साहब! मैं तो हनुमान चालीसा का पाठ करूँगा। भाड़ करेगा हनुमान चालीसा का पाठ, अपने जीवन को सुधारना नहीं चाहता और पाठ करेगा। मित्रो! आप योगाभ्यास का मतलब समझिए। आप जहाँ कहीं भी जाइए, ध्रुव को देख लीजिए, विभीषण को

देख लीजिए, हनुमान जी को देख लीजिए, अर्जुन को देख लीजिए, हर एक को देख लीजिए। आप सांसारिक गुरुभक्ति को देखना चाहें तो शिवाजी को देख लीजिए कि समर्थ गुरु रामदास का चेला कैसा हो सकता है? इन सबको आप देख लीजिए।

वास्तविक चेला कौन?

नहीं महाराज जी! मैं तो आपका चेला हूँ। आपसे इसलिए गुरुदीक्षा ली थी कि आपकी कृपा हो जाएगी। कहाँ ली थी गुरुदीक्षा? महाराज जी! जब आप वहाँ कोटा-बूँदी गए थे। हाँ, बेटे! तब ली होगी, लेकिन बेटे! गुरुदीक्षा ले तो इस तरह की ले, जैसे शिवाजी ने समर्थ गुरु रामदास से ली थी। मैं तो ऐसी ही गुरुदीक्षा देता हूँ। नहीं साहब! हम तो आपसे आशीर्वाद माँगने के लिए गुरुदीक्षा लेते हैं। चालाक कहीं का, हमसे आशीर्वाद पाने के लिए दीक्षा लेता है? हमारा तीन साल का तप ले जाना चाहता है और हमें चवन्नी की माला पहनाना चाहता है, धूर्त कहीं का। तू चेला नहीं, हमारा असली गुरु

है। इसलिए मित्रो! चेला बनने के लिए आपको इन खेल-खिलौनों की बात नहीं करनी चाहिए। आपको शिष्य बनना हो तो मांधाता जैसा शिष्य बनना चाहिए। मांधाता किसका शिष्य बना था? शंकराचार्य का और भगवान बुद्ध का शिष्य बना था अशोक और हर्षवर्द्धन। आप ऐसे शिष्य बनिए, नहीं महाराज जी! आप तो हमारे गुरु हैं? नहीं बेटे! तू क्या जाने गुरु और चेला। तू बेकार में गुरु और चेला बकता फिरता है। तूने ये दो शब्द कहीं से सुन लिए हैं कि कोई गुरु होता है और कोई चेला होता है, किंतु इनका मतलब नहीं समझता है कि गुरु-चेला का अर्थ क्या है?

बेटे! गुरु और चेला का मतलब होता है—गांधी और जवाहरलाल नेहरू जैसा, रामकृष्ण और विवेकानंद जैसा। महाराज जी! हमें भी विवेकानंद बना दीजिए? हाँ, बेटे! वायदा करता हूँ कि मैं तुमको विवेकानंद बना दूँ, पर पहले तू चेला तो बन। नहीं, महाराज जी! आप तो वैसे ही विवेकानंद बना दीजिए और अमेरिका का टिकट दिलवा दीजिए और

जहाँ कहीं भी स्पीच दूँ, वहाँ की फोटो अखबारों में छपवा दीजिए। बेटे! तू अपनी चालाकी से बाज नहीं आएगा। हाँ, महाराज जी! मैं तो व्याख्यान देकर आऊँगा और फिर नौकरी कर लूँगा। ब्याह–शादी भी अगले साल कर लूँगा और देखिए फिर मैं तीन बच्चे भी पैदा करने वाला हूँ और विवेकानंद भी बनने वाला हूँ। हाँ, बेटे! तू बड़ा होशियार है। सारी होशियारी तो तेरे हिस्से में ही आ गई है। हाँ, महाराज जी! मुझे विवेकानंद बना दीजिए। तुझे, पागल को विवेकानंद बना दें।

पात्रता का विकास करें

मित्रो! क्या करना पड़ेगा? आपको आध्यात्मिकता के उन सिद्धांतों को जीवन में समाविष्ट करना पड़ेगा और अपनी पात्रता का विकास करना पड़ेगा। योग के लिए आपको, अपनी पात्रता और प्रामाणिकता बढ़ानी चाहिए। स्वाति नक्षत्र में पानी की बूँदे सीप में गिरती हैं और उसमें मोती बनता है। हर जगह मोती नहीं बनता। आपको मोती वाली

सीप बनना चाहिए और मुँह खोलना चाहिए, ताकि स्वाति की बूँदें आपके अंदर प्रवेश करने में समर्थ हो सकें। बरसात होती है तो किसी बरतन में केवल उतनी ही मात्रा में पानी जमा होता है, जितनी कि उसके पास जगह होती है। आप अपने बरतन का आकार बढ़ाइए, ताकि भगवान की कृपा और भगवान का अनुग्रह और गुरु का आशीर्वाद आपके ऊपर छाया रहे और आप उसको हजम कर सकें तथा उसको धारण कर सकें। धारण करने की ताकत इकट्ठी कीजिए। धारण करने की ताकत नहीं है और दुनिया भर से माँगते फिरते हैं। आप उसे रखेंगे कहाँ पर? नहीं, साहब! आप तो आशीर्वाद दीजिए। बेटे! हम आशीर्वाद तो दे भी दें, पर तू उस आशीर्वाद को रखेगा कहाँ पर? उसे रखने के लिए तेरे पास जगह भी है या नहीं? नहीं, महाराज जी! घी दे दीजिए। अच्छा, बेटे! दे देंगे, लेकिन इसे रखेगा किसमें? महाराज जी! कुरते में ले लूँगा। ठीक है, कुरते में ले-ले घी, लेकिन इससे तेरा कुरता भी

खराब हो जाएगा, धोती भी खराब हो जाएगी और घी भी फैल जाएगा। नहीं, महाराज जी! आप तो दे सकते हैं? कैसे दें, लेगा कहाँ? आशीर्वाद को लेने के लिए ताकत चाहिए। हजम करने के लिए शक्ति चाहिए, उसको धारण करने के लिए क्षमता चाहिए। आप अपने भीतर उस क्षमता को पैदा कीजिए, फिर हम दे देंगे आशीर्वाद।

इच्छा भगवान को सौंप दें

मित्रो! पात्रता का विकास यही है, जिसके आधार पर हमारी भक्ति सफल होती हुई चली जाती है। भगवान की नाव पर सवार होकर के हम अपने आप को पार कर सकते हैं। हवा के तरीके से ऊँचे उठते हुए चले जा सकते हैं, लेकिन इसके लिए हमको एक काम करना पड़ेगा। हमको अपनी इच्छाएँ भगवान को सौंपनी पड़ेंगी। आप अपनी इच्छाएँ सौंप दीजिए और भगवान की बिरादरी में शामिल हो जाइए और यह कहिए कि अब हमारी कोई इच्छा नहीं है। अब भगवान की इच्छा ही हमारी इच्छा है। आप

चलाइए, हम अपने जीवन की नीति का निर्धारण उसी तरीके से करेंगे। हम अपने विचारों का और दृष्टिकोण का नवीनीकरण इस तरीके से करेंगे, जैसे भगवान की, शास्त्रों की, आदर्शों और सिद्धांतों की प्रणाली है। बेटे! हमने यही किया। हम योगी हैं। कौन सा योग करते हैं? बेटे! हम शीर्षासन करते हैं। अच्छा तो गुरु जी! आप शीर्षासन में सिर के बल चलना शुरू कर देते हैं? नहीं बेटे! ऐसे तो नट करता है तो फिर आप नाक में से पानी निकालते हैं? नहीं बेटे! तो फिर आप कैसे योगी हैं? बेटे हम ऐसे योगी हैं कि हमने अपने गुरु को भगवान माना है और उनसे यह कहा है कि आप हुकुम दीजिए और हम आपके साथ-साथ चलेंगे। सारी जिंदगी भर, पचास वर्ष हो गए, पंद्रह वर्ष की उम्र से लेकर के आज सड़सठ वर्ष की उम्र तक हमारे मन में दूसरा कोई ख्याल नहीं आया। एक ही ख्याल आया कि उत्तर की तरफ मुँह करके यह पूछते हैं कि हमारे मार्गदर्शक, हमारे मास्टर हुकुम दें, ताकि हमारी बची हुई हड्डियाँ, बचा हुआ मांस, बचा हुआ रक्त,

बचा हुआ धर्म और हमारी क्षमताएँ आपके काम आ सकें और हम आपके हुकुम के लिए काम आ सकें। इसके अतिरिक्त हम और कुछ नहीं सोचते हैं।

कामनाओं का विसर्जन

मित्रो! उसका परिणाम क्या हुआ? उसका परिणाम यह है कि उनकी शक्तियाँ, उनकी सामर्थ्य, उनका तप, उनकी क्षमता हमारे पास असंख्य मात्रा में उड़ती हुई चली आती है। हमने एक सेर अपना कमाया है तो निन्यानवे सेर गुरु का खाया है। हमारा संबंध उसी रिजर्व बैंक से है। हमारे बैंक में तो पैसा रहता नहीं है, लेकिन हम ड्राफ्ट काट देते हैं, दूसरों को चेक दे देते हैं। कहाँ से पैसा आ जाता है? रिजर्व बैंक से आ जाता है। हमने अपने आप को रिजर्व बैंक में 'मर्ज' कर दिया है, इसलिए रिजर्व बैंक हमारे 'क्रेडिट' और 'डेबिट' दोनों को सँभालता है। इसलिए मित्रो! आप हिम्मत कीजिए, अपने कलेजे को कड़ा कीजिए, बहादुर बनिए और एक चीज त्याग दीजिए, जिसको इच्छा कहते हैं, कामनाएँ

कहते हैं। आप अपनी कामनाएँ भगवान के ऊपर मत थोप दीजिए। आप अपनी कामनाएँ खतम कर दीजिए और भगवान की कामनाओं को अपने रोम-रोम में बसाकर के ले जाइए। आप योग्य हो जाइए। अगर आप भगवान में मिल गए, उनकी कामनाओं में शामिल हो गए, अगर आप बूँद की तरह समुद्र में शामिल हो गए, फिर आप भक्ति का कमाल देखिए, भक्ति का चमत्कार देखिए। फिर भगवान की सामर्थ्य का, भगवान की कृपा का चमत्कार देखिए। फिर योगाभ्यास का चमत्कार देखिए। योग ऐसा ही होना चाहिए। उलटा चलने वाला, नाक में से पानी पीने वाला, पेट में से हवा निकालने वाला योगी नहीं है। आप योगी बनिए, फिर उसका मजा देखिए कि उसका क्या फायदा हो सकता है?

दुःखों को सहना, तप करना

साथियो! दूसरा हिस्सा है—तप। तप किसे कहते हैं? बेटे! तप उसे कहते हैं कि कुछ मुसीबतें तो हमारे भाग्यवश आती हैं, परिस्थितिवश आती हैं।

कुछ मुसीबतें ऐसी होती हैं, जिन्हें हम सिद्धांतों की वजह से, आदर्शों की वजह से अपने आप बुलाकर स्वीकार करते हैं। इसका नाम है, तप। मुसीबतें किसके पास नहीं आतीं, बताना जरा? आपमें से किसी के पास मुसीबतें आईं? हाँ, महाराज जी! हमारे व्यापार में बहुत घाटा हो गया। आपमें से इन मुसीबतों से कोई बचा हुआ है क्या? कोई एक भी आदमी बताए मुझे। कहा गया है—"रे रे मनुष्यः वदति अतिसुखम्......" अर्थात अरे मनुष्यो! किंचित तुममें से कोई एक आदमी भी ऐसा हो, जो ये कह सकता हो कि हमने सारी जिंदगी सुख के साथ व्यतीत कर ली, आपमें से कोई हो तो हमें बताओ। एक भी नहीं है। हर एक के ऊपर मुसीबतें आती हैं, आएँगी और आनी चाहिए, क्योंकि सुख जहाँ हमें उन्नति की ओर ले जाते हैं, वहीं दुःख और मुसीबतें हमें सावधानी की ओर ले जाती हैं, सतर्क बनाती हैं, मजबूत बनाती हैं, बहादुर बनाती हैं। हमारे ज्ञान और धर्म को सही करती हैं। दुःख भी अपने आप में

जरूरी है। शक्कर भी जरूरी है, नमक और मिर्च भी जरूरी है। दोनों के बिना शाक नहीं बन सकता।

आदर्शों के लिए करें गरीबी स्वीकार

मित्रो! दुःखों की अपनी उपयोगिता है तो सुखों की अपनी उपयोगिता है, लेकिन जब हम दुःखों को सिद्धांतों के लिए, आदर्शों के लिए इच्छापूर्वक स्वीकार करते हैं, जब हम उन्हें बुलाते हैं कि आप आइए, हम सिद्धांत का जीवन जीना चाहते हैं, आदर्श का जीवन जीना चाहते हैं तो हमें स्वेच्छा से गरीबी मंजूर करनी पड़ती है। गरीबी के बिना आध्यात्मिक जीवन प्रारंभ नहीं हो सकता। एक गरीबी थोपी हुई होती है और एक गरीबी इच्छानुकूल ली गई होती है। इसका क्या मतलब होता है? इसका मतलब होता है कि हम अपने आप में किफायतशारी बनें। कम से कम में, न्यूनतम में, जितनी भी हमारी आवश्यकताएँ पूरी की जा सकती हैं, उतने में पूरी करें। इसके बाद जो बाकी हमारे पास पैसा बच जाता है, श्रम बच जाता है, समय बच जाता है, अक्ल

बच जाती है, उन सारी की सारी चीजों को बचत करने के पश्चात उसे भगवान के तईं लगाएँ, समाज के तईं लगाएँ, श्रेष्ठकर्मों के तईं लगाएँ। ये तप कहलाएगा। कैसे कहलाएगा? क्योंकि इसमें आपको मुसीबतें उठानी पड़ेंगी, अपने आप को तंग करना पड़ेगा। आप किफायतशारी बनेंगे तो आपको तंगी आएगी कि नहीं? फिर आपको कैसे अच्छा खाना मिल सकता है, जब आपको यह मालूम पड़ेगा कि हम इस गरीब मुल्क में रहते हैं, जिसमें मनुष्यों को दोनों वक्त का भोजन नहीं मिलता। फिर आप मक्खन की डिमांड नहीं कर सकते, दूसरी चीजों की डिमांड नहीं कर सकते।

अपने लिए कम औरों के लिए ज्यादा

तप का आरंभ यहीं से होता है, जिसको हम भूखा रहने के माध्यम से शुरू कराते हैं, तप में क्या-क्या नियम पालन करने पड़ते हैं? गायत्री अनुष्ठानों में हम आपको तप के नियम पालने के लिए कहते हैं। हम कहते हैं कि आप तपस्वी बनिए

और तप करने के लिए छोटे-छोटे नियम हम आपको बताए देते हैं। जीभ पर काबू रखिए, उपवास कीजिए, भूखे रहिए, ब्रह्मचर्य से रहिए, जमीन पर सोइए, अपने शरीर की सेवा स्वयं कीजिए। ये सारे के सारे तप के नियम हम आपको बताते हैं। इसका क्या मतलब है? इसका मतलब केवल इतना है कि हम मुसीबतों का स्वेच्छा से अभ्यास करें, तितिक्षा का हम स्वेच्छा से अभ्यास करें। अगर हमें गरीबी में रहना पड़े, कंगाली में रहना पड़े, किफायतशारी में रहना पड़े तो हम कम खरचे में भी काम चला सकें। तप यहीं से प्रारंभ होता है। तप का दूसरा पक्ष है—'सादा जीवन, उच्च विचार'। उच्च विचार वही आदमी कर सकता है, जो 'Simple Living' में विश्वास करता है। ब्राह्मण के लिए, साधु के लिए यही नियम बताया गया है कि उसे किफायतशार होना चाहिए, मितव्ययी होना चाहिए, अपरिग्रही होना चाहिए। इसका क्या मतलब है? इसका एक ही मतलब है कि जो कुछ भी आपके

पास है, अपने लिए उसका कम से कम इस्तेमाल करें और ज्यादा से ज्यादा समाज को दें।

प्राणवान बनिए, कष्ट उठाइए

मित्रो! तप वहाँ से आरंभ होता है; जबकि हमको भिन्न-भिन्न कामों के लिए कष्ट उठाने के लिए तैयार रहना पड़ता है। आपने देखा होगा कि अच्छे काम करने वालों को गालियाँ पड़ती हैं। समाज-सुधारकों को रोज गालियाँ पड़ती हैं। स्वामी दयानंद को जहर खिला दिया गया। गांधी जी को गोली मार दी गई। श्रीकृष्ण जी को तीर मार दिया गया। वे सब जिन्होंने समाज की विकृतियों से लोहा लिया, सबको मुसीबतें उठानी पड़ीं। आप स्वेच्छा से तैयार हो जाइए और कहिए कि मुसीबतों आपका स्वागत है, कठिनाइयों आपका स्वागत है। लोग आपको गाली देंगे। गालियाँ देने वालो आपका स्वागत है। बेटे! मैं तो हरदम कहता रहता हूँ कि गांधी के चेलों ने गोलियाँ खाई थीं। आचार्य जी का जो कोई चेला बनना चाहता है, वह कम से कम गालियाँ खाकर के आए। 'बॉस' की

गाली खाकर के आए, बीबी की गाली खाकर के आए। पड़ोसी की गाली खाकर के आए। जब आप श्रेष्ठ सिद्धांतों को कार्यरूप में परिणत करने के लिए खड़े हो गए हों तो जिन-जिन लोगों के स्वार्थों को आघात पहुँचता होगा, वे सब आपकी बुराई करेंगे और ढेरों गालियाँ देंगे, रात को नुकसान कर जाएँगे। 'बॉस' आपका ट्रांसफर करा देगा, करेक्टर रोल खराब कर देगा, जुरमाना करा देगा। मित्रो ! आपको मुसीबतें और कठिनाइयाँ उठाने के लिए तपस्वी का जीवन जीना चाहिए। अपने अंदर क्षमताओं का विकास करना चाहिए। आपको उदार बनना चाहिए, दानी बनना चाहिए। आपको प्राणों से भरा होना चाहिए, ताकि आप मुसीबतें उठा सकें।

मैं तो कंगाल बना सकता हूँ

नहीं, महाराज जी! आप तो हमें आमदनी करा दीजिए, बीमा दिलवा दीजिए। नहीं बेटे। मैं ऐसा नहीं करा सकता। तू अध्यात्म मार्ग पर चलने की हिम्मत करता है तो मैं तुझे कंगाल बना सकता

हूँ। देख राजा भर्तृहरि को कंगाल बनना पड़ा, राजा हरिश्चंद्र को कंगाल बनना पड़ा, ध्रुव को कंगाल बनना पड़ा। गोपीचंद्र को कंगाल बनना पड़ा, बुद्ध को कंगाल बनना पड़ा, रामचंद्र जी को कंगाल बनना पड़ा, भरत जी को कंगाल बनना पड़ा। भगवान के भक्तों में से हर एक को कंगाल बनना पड़ा। नहीं, महाराज जी! आप तो हमें अमीर बना दीजिए। नहीं, बेटे! मैं अमीर नहीं बना सकता। अमीर बनने की तेरी इच्छा है तो राम नाम लेना बंद कर, फिर मैं एक और मंत्र तुझे बता सकता हूँ। उसका नाम है, रावण। तू रावण के नाम का जप कर, क्योंकि रावण के पास एक सोने की लंका थी। बाल-बच्चे भी थे। तू रावण का पाठ किया कर और 'रावणाय नमः, रावणाय नमः' का जप किया कर। इससे शायद लक्ष्मी जी भी आ सकती हैं। पैसा भी आ सकता है। राम के नाम से नहीं आएगा। राम के नाम से तुझे तपस्वी जीवन जीना पड़ेगा। ब्रह्मचारी रहना पड़ेगा और मर्यादाओं का पालन करना पड़ेगा। नहीं, साहब!

रामचंद्र जी का जप करूँगा और पैसा कमाऊँगा। बेटे! ऐसा नहीं हो सकता।

तप से आएगी मजबूती

मित्रो! तपस्वी का जीवन जीने के लिए आपको हिम्मत और शक्ति इकट्ठी करनी चाहिए। तपाने के बाद हर चीज मजबूत हो जाती है। कच्ची मिट्टी को जब हम तपाते हैं तो तपने के बाद मजबूत ईंट बन जाती है। कच्चा लोहा तपाने के बाद स्टेनलेस स्टील बन जाता है। पारे को जब हकीम लोग तपाते हैं तो पूर्ण चंद्रोदय बन जाता है। पानी को गरम करते हैं तो भाप बन जाता है और उससे रेल के बड़े-बड़े इंजन चलने लगते हैं। कच्चे आम को पकाते हैं तो पका हुआ आम बन जाता है। जब हम वेल्डिंग करते हैं तो लोहे के दो टुकड़े जुड़ जाते हैं। उस पर जब हम शान धरते हैं तो वह हथियार बन जाता है। बेटे! यह सब गलने की निशानियाँ हैं। आपको अपने ऊपर शान धरनी चाहिए और भगवान के साथ वेल्डिंग करनी चाहिए। आपको अपने आप को इतना तपाना

चाहिए कि आप पानी न होकर स्टीम—भाप बन जाएँ। कौन सी वाली स्टीम ? जो रेलगाड़ी को धकेलती हुई चली जाती है। यह गरमी के बिना नहीं हो सकता। गुरु जी ! हम तो मुसीबतों से दूर रहेंगे। आप मुसीबतों से दूर नहीं रह सकते। तपस्वी जीवन, आध्यात्मिक जीवन मुसीबतों से दूर नहीं रखा जा सकता। गुरु जी! आप तो ऐसी कृपा कीजिए कि हमारी जिंदगी शांति से व्यतीत हो जाए। शांति से तेरा क्या मतलब है ? शांति से मेरा मतलब चैन से है। नहीं, बेटे! चैन की जिंदगी नहीं हो सकती। संघर्ष करने के बाद, अशांति को नष्ट करने के बाद जब हमको शांति मिलती है, विजयश्री मिलती है, उसी का नाम 'शांति' है। संतोष का नाम शांति है। संतोष श्रेष्ठ काम करने वालों को मिलता है। सफल को भी मिल सकता है, असफल को भी मिल सकता है। गरीब को भी मिल सकता है, अमीर को भी मिल सकता है। आपको तपस्वी बनने के लिए यही करना चाहिए।

योग एवं तप बनें जीवन के अंग

मित्रो! हमने लोगों को यज्ञ की शिक्षा दी है। हम यज्ञ की प्रक्रिया बताते हैं, यज्ञ का प्रचार बताते हैं, यज्ञ का प्रचार करते रहते हैं, गायत्री का प्रचार करते रहते हैं। '**धियो यो नः प्रचोदयात्**' की शिक्षा देकर विवेक की शिक्षा देने के लिए, दूरदर्शिता की शिक्षा देने के लिए लोगों को हम योगी बनाते हैं। इसके लिए सवेरे आपको यज्ञ कराते हैं, गायत्री मंत्र का अनुष्ठान भी कराते हैं। यज्ञ का प्रचार हम इसलिए करते हैं कि लोगों में यज्ञीय वृत्ति पैदा हो जाए। यज्ञ में हम अपनी चीजों को हवन कर देते हैं, जला देते हैं, हवा में बिखेर देते हैं। समाज की संपदा बना देते हैं। आग जिस किसी को भी अपने पास पाती है, उसे अपने समान बना लेती है। आग अपना मस्तक नीचे नहीं झुकाती। यज्ञ हमारे इस शरीर में भी चल रहा है। यज्ञ आसमान में भी चल रहा है। पानी बादलों से बरसता है। बादल जमीन में से, समुद्र में से पानी लेकर के बरसते हैं और पानी का यह चक्र चलता रहता है। शरीर में भी चक्र

चल रहा है। हाथ बनाते हैं, पेट खाता है। यह चक्र बराबर चल रहा है। इस चक्र को आप कायम रखें। एकदूसरे की मदद करें, एकदूसरे की सेवा करें, एकदूसरे की सहायता करें। हमने आप को तपस्वी बनने के लिए यज्ञ का शिक्षण दिया है। यज्ञ का आंदोलन वास्तव में तपस्या का आंदोलन है, कष्ट सहने का आंदोलन है। खुशी-खुशी से कष्ट सहने के लिए, त्याग और बलिदान करने के लिए, खुशी-खुशी से सेवा करने के लिए, आपके भीतर से प्रेरणा और उमंग उत्पन्न करने के लिए हमने यह आंदोलन चलाया है। इसका अर्थ है—तप। हमने गायत्री मंत्र का विस्तार इसलिए नहीं किया है कि आप मालदार होते हुए चले जाएँ और अमीर होते हुए चले जाएँ। हमने गायत्री मंत्र का विस्तार इसलिए किया है कि आप में विवेकशीलता और समझदारी की शक्ति का विकास हो। योग अर्थात—गायत्री और तप अर्थात—यज्ञ। ये हमारे आध्यात्मिकता के दोनों पहलू हैं, जो आपके व्यक्तित्व को श्रेष्ठ बनाते हैं।

गायत्री विद्या और यज्ञ विज्ञान का युग्म

लौकिक जीवन में प्रत्येक भारतीय के मन में जो श्रद्धा और सम्मान की भावना अपने माता-पिता के लिए रहती है आध्यात्मिक दृष्टि से उससे अनेक गुना अधिक महत्त्व गायत्री और यज्ञ को दिया गया है। मनुष्य जीवन पंचभौतिक पदार्थों से बना तो है पर उसमें गति का कारण सूक्ष्म प्राण ही होते हैं। गायत्री प्राणविद्या का ही प्रयोग है अतएव उसकी उपेक्षा अपने लिए अहितकर ही होती है। प्राणों को स्थिरता, स्निग्धता प्रदान करने के साथ समष्टि प्राणों को दूसरे दूषित तत्त्वों के दूषण से बचाने की दृष्टि से यज्ञ की महत्ता स्वीकार की गई। इसे भारतीय संस्कृति की सर्वोत्कृष्ट उपलब्धि माना जा सकता है।

गायत्री विद्या और यज्ञ का युग्म है। एक को भारतीय संस्कृति की जननी और दूसरे को भारतीय धर्म का पिता कहा गया है। दोनों अन्योन्याश्रित माने गए हैं। गायत्री जप का अनुष्ठान यज्ञ का समन्वय हुए बिना पूरा नहीं हो सकता। जप का एक अंश

हवन भी करना होता है। पुराने समय की सुविधासंपन्न स्थिति में, जप का दशांश हवन होता था, अब समय को देखते हुए शतांश आहुतियों की व्यवस्था है। इसके बिना अनुष्ठान पूरा नहीं माना जाता। जिनके पास साधन नहीं हैं उनके लिए विशेष मार्ग यह निकाल दिया गया है कि वे जप की संख्या का दशांश भाग अलग से जप लें और उसे यज्ञ की स्थान पूर्ति मान लें। इस विकल्प प्रतिपादन में यज्ञ की उपेक्षा नहीं वरन अनिवार्यता बताई गई है, भले ही वह सही रूप से संपन्न न हो सकी हो तो भी और अपवाद की तरह ही अतिरिक्त जप के रूप में क्यों न अपनाई गई हो।

जनक और याज्ञवल्क्य का संवाद यज्ञ के साधन न मिल सकने के संदर्भ में हुआ है। जनक कठिनाइयाँ बताते रहे हैं और याज्ञवल्क्य उसके लिए आपत्ति-कालीन सुझाव बताते हुए अनिवार्यता पर ही जोर देते रहे हैं। जनक पूछते हैं यदि हव्य चरु सामग्री न मिल सके तो क्या करें? उत्तर में कहा गया है कि

नित्य खाये जाने वाले अन्न से ही काम चला लें। अन्न भी न हो तो? वनस्पतियों से काम चला लें। वनस्पतियाँ भी न मिल सकें तो मात्र समिधाओं का ही हवन कर लिया जाए। अग्नि भी न मिले तो श्रद्धारूपी अग्नि में ध्यान भावना की सामग्री होम कर मानसिक हवन कर लिया जाए। यही है उपरोक्त संवाद के विस्तार का सार-संक्षेप।

इससे सिद्ध किया गया है कि गायत्री जप के साथ यज्ञ कर्म की भी अनिवार्य आवश्यकता है। अनुष्ठानों में तो दोनों परस्पर संबद्ध ही हैं। गायत्री जप को दैनिक नित्य कर्म में सम्मिलित रखने की सामान्य धर्म व्यवस्था में दैनिक पंचयज्ञों को भी उसी तरह का आवश्यक कृत्य बताया गया है। सभी जानते हैं कि उपासना कृत्य में बलिवैश्व विधि भी जुड़ी हुई है, जिसका अर्थ होता है—संक्षिप्त हवन। कठिनाई के दिनों में यह बलिवैश्व इतना संक्षिप्त हो गया था कि महिलाएँ चूल्हे में से अग्नि निकालकर उस पर प्रथम सिकी रोटी के पाँच कण गायत्री मंत्र

का पाँच बार उच्चारण करते हुए हवन कर लेती थीं। नैष्ठिक उपासक भी ऐसा ही करते थे, वे भोजन के समय सामने परोसे भोजन के पाँच छोटे ग्रास पास में अग्नि मँगाकर हवन कर लिया करते थे। अब भी यह परंपरा जहाँ-तहाँ जीवित है। युग निर्माण मिशन द्वारा इस संक्षिप्त परंपरा को पुनर्जीवित करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

भारतीय परंपराओं के प्रचलन में तत्त्वदर्शी ऋषियों ने बुद्धिमत्ता, सूक्ष्मदृष्टि, उपयोगिता एवं तथ्य स्थिति को पग-पग पर ध्यान में रखकर ही कदम उठाए हैं। धर्मकृत्यों में यज्ञ को प्राथमिकता देते हुए भी उनने अनेकानेक तथ्यों को ध्यान में रखा है। उपयोगिता रहित प्रचलन वे कर ही नहीं सकते थे। प्रमुखता देने के क्रम में भी उन्होंने किसी कृत्य की प्रतिक्रिया और उपलब्धि को ही ध्यान में रखा है। यज्ञ को धर्मकृत्यों में प्रधानता मिलने में भी उसकी भौतिक एवं आत्मिक उपलब्धियों को ही ध्यान में रखा गया है।

शास्त्रों में भगवान का एक नाम 'यज्ञ पुरुष' भी है। शतपथ की '**यज्ञौ वै विष्णु**' श्रुति में यज्ञ को निश्चित रूप से विष्णु ही माना है। 'वै' शब्द में इस प्रतिपादन पर जोर दिया गया है और निश्चित कहा गया है। ऋग्वेद के आरंभ में यज्ञ को मार्गदर्शक पुरोहित सद्गुरु बताया गया है। भजन करने वाले को 'देव' संज्ञा देते हुए उस कृत्य की प्रतिक्रिया को रत्नराशि की उपमा दी गई है। वेद वाङ्मय में जितना प्रकाश यज्ञ विद्या पर डाला गया है और यज्ञाग्नि का जितना माहात्म्य बताया गया है, उतना और किसी का नहीं। '**अग्ने नय सुपथा राये.........**।' ऋचा में इस सर्वसमर्थ शक्ति से सन्मार्ग पर घसीट ले चलने की अभ्यर्थना है। गायत्री मंत्र के '**धियो यो नः प्रयोदयात्**' भाग का यही अभिप्राय है। आज की बात समाप्त।

॥ ॐ शांतिः ॥

❐

सद्वाक्य

* मनुष्य का पुरुषार्थ सर्वोपरि है, वह विधि के विधान तक को बदल डालने में समर्थ है।
* जीवन में किसी सदुद्देश्य की सफलता के लिए दृढ़ निश्चय का होना परमावश्यक है।
* चरित्र का अर्थ है, महान मानवीय उत्तरदायित्वों की गरिमा समझना और उसका हर कीमत पर निर्वाह करना।
* जहाँ सच्चा प्रेम है, वहाँ त्याग, उत्सर्ग और बलिदान की भावना होनी अनिवार्य है।

□□

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ. प्र.)